

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 4 अध्याय 5: दक्ष के यज्ञ का विध्वंस

14 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



भगवान् शिव की जटा के एक ही लट से, जिसे शोक के आवेश में भूमि पर पटका गया, विशालकाय योद्धा वीरभद्र प्रकट होते हैं — एक तूफान, जो उस यज्ञ को ध्वस्त करने के लिए उमड़ रहा है जिसने भगवान् का तिरस्कार किया।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञप्ति में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में सती ने उस कन्या का रूप धारण किए रखने के बजाय, जिसके पिता ने उनके स्वामी की निन्दा की थी, योग की अग्नि में अपनी देह त्याग दी, और एक महान् शोक-नाद स्वर्ग तथा पृथ्वी में गूँज उठा। यह पंचम अध्याय बताता है कि वह शोक कैलास पर भगवान् शिव तक कैसे

पहुँचा, और उनके शोक ने, क्रोध में बदलकर, क्या प्रकट किया। उनकी जटा के एक ही लट से पराक्रमी वीरभद्र प्रकट होते हैं, जो रुद्र के गणों को दक्ष के अभिमानी यज्ञ के विरुद्ध ले चलते हैं। यह एक गम्भीर अध्याय है — उस प्रतिफल के विषय में जो भगवान् के प्रति अवमानना को घेर लेता है, और, ठीक से पढ़ा जाए तो, उस भयंकर गम्भीरता के विषय में जिससे शास्त्र भगवान् तथा उनके भक्तों के अनादर को देखते हैं।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 4 (चतुर्थ स्कन्ध)
- अध्याय: 5 (पंचम अध्याय)
- अध्याय का शीर्षक: दक्ष के यज्ञ का विध्वंस
- मुख्य वक्ता: महर्षि मैत्रेय, विदुर को अपने उपदेश की निरन्तरता में
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थल: कैलास पर्वत, भगवान् शिव का धाम, तथा दक्ष का महान् यज्ञस्थल
- केन्द्रीय विषय: सती की मृत्यु पर भगवान् शिव का शोक तथा क्रोध, वीरभद्र का प्राकट्य, और दक्ष के यज्ञ का विध्वंस
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 1-26
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 4 में, सती भगवान् शिव की चेतावनी के विरुद्ध अपने पिता दक्ष के यज्ञ में गई, अपने स्वामी के लिए कोई आहुति न रखी पाई, और परम कल्याणकारी भगवान् के प्रति अपने पिता की अवमानना के लिए समस्त सभा के समक्ष उनकी भर्त्सना की। फिर, शिव-द्वेषी से उत्पन्न शरीर को रखने के लिए अनिच्छुक, उन्होंने अपने मन को अपने स्वामी के चरण-कमलों में लीन किया और योग की अग्नि में उसे त्याग दिया। उनके परिचर दक्ष पर प्रहार करने को उठे, किन्तु यज्ञ-अग्नि से प्रकट हुए दिव्य प्राणियों ने उन्हें भगा दिया। जब यह अध्याय आरम्भ होता है, समाचार कैलास की ओर दौड़ रहा है।

शिव का क्रोध

महर्षि नारद कैलास पर यह समाचार लाए: कि सती दक्ष द्वारा अपमानित होकर अपने प्राण त्याग चुकी हैं, और शिव के अपने परिचरों का समूह यज्ञ से प्रकट हुए ऋभुओं द्वारा भगा दिया गया है। यह जानकर भगवान् शिव अपार क्रोध से आविष्ट हो उठे।

मैत्रेय उवाच

भवो भवान्या निधनं प्रजापते-

रसत्कृताया अवगम्य नारदात् ।

स्वपार्षदसैन्यं च तदध्वरर्भुभि-

र्विद्रावितं क्रोधमपारमादधे ॥ १ ॥

maitreya uvāca bhavo bhavānyā nidhanam prajāpater asat-kṛtāyā avagamya nāradāt sva-pārṣada-sainyam ca tad-adhvararbhuhir vidrāvitaṁ krodham apāram ādadhe

अर्थ: मैत्रेय ने कहा: जब भगवान् शिव ने नारद से जाना कि उनकी पत्नी सती प्रजापति दक्ष द्वारा अपमानित होकर मृत्यु को प्राप्त हुई हैं, और उनके अपने परिचरों का समूह उस यज्ञ से प्रकट हुए ऋभुओं द्वारा भगा दिया गया है, तब वे अपार क्रोध से आविष्ट हो उठे। (स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 1)

क्रोध में ओंठ चबाते हुए, शिव ने अपनी जटा से एक लट उखाड़ ली — जो बिजली तथा अग्नि-शिखा के समान चमक रही थी — अपने पैरों पर एकाएक उठ खड़े हुए, गम्भीर गर्जना के साथ हँसे, और उसे भूमि पर पटक दिया।

क्रुद्धः सुदष्टौष्ठपुटः स धूर्जटि-

र्जटां तडिद्वह्निसदोग्रोचिषम् ।

उत्कृत्य रुद्रः सहसोत्थितो हसन्

गम्भीरनादो विससर्ज तां भुवि ॥ २ ॥

kruddhaḥ sudaṣṭauṣṭha-puṭaḥ sa dhūr-jaṭir jaṭām taḍid-vahni-saṭogra-rociṣam utkṛtya rudraḥ sahasotthito hasan gambhīra-nādo visasarja tāṁ bhuvi

अर्थ: क्रोध में ओंठ चबाते हुए, जटाओं का भारी बोझ धारण करने वाले भगवान् शिव ने एक ऐसी ही लट उखाड़ ली — जो बिजली तथा अग्नि के समान भयंकर रूप से चमक रही थी — और एकाएक उठ खड़े होकर, गम्भीर गर्जना के साथ हँसते हुए, उसे भूमि पर पटक दिया। (स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 2)



नारद से सती की मृत्यु तथा अपने परिचरों के भगाए जाने का समाचार जानकर, अपार शोक तथा क्रोध से आविष्ट भगवान् शिव अपनी जटा से एक प्रज्वलित लट उखाड़कर उसे भूमि पर पटकते हैं (श्लोक 1-2)।

वीरभद्र का प्राकट्य

उस लट से एक विशालकाय प्राणी प्रकट हुआ — वीरभद्र — जिसका गगनचुम्बी शरीर आकाश को छू रहा था। उसकी सहस्र भुजाएँ थीं; उसका शरीर मेघ के समान श्याम था; उसके तीन नेत्र सूर्यों के समान दीप्त थे, उसकी दाढ़ें विकराल थीं, और उसके केश अग्नि के समान प्रज्वलित थे; उसने कपालों की माला धारण की थी और अनेक उठे हुए अस्त्र लिए थे।

ततोऽतिकायस्तनुवा स्पृशन् दिवं
सहस्रबाहुर्धनरुक् त्रिसूर्यदृक् ।
करालदंष्ट्रो ज्वलदग्निमूर्धजः
कपालमाली विविधोद्यतायुधः ॥ ३ ॥

tato 'tikāyas tanuvā sprśan divaṁ sahasra-bāhur ghana-ruk tri-sūrya-dṛk karāla-daṁṣtro jvalad-agni-mūrdhajaḥ kapāla-mālī vividhodyatāyudhaḥ

अर्थ: उस लट से एक विशालकाय प्राणी प्रकट हुआ, जिसका शरीर आकाश को छू रहा था; सहस्र भुजाओं वाला, मेघ के समान श्याम, सूर्यों के समान दीप्त तीन नेत्रों वाला, विकराल दाढ़ों वाला, और अग्नि के समान प्रज्वलित केशों वाला, कपालों की माला धारण किए तथा अनेक उठे हुए अस्त्रों से युक्त। (स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 3)

हाथ जोड़कर उस पराक्रमी प्राणी ने पूछा कि वह क्या करे। समस्त भूतों के स्वामी भगवान् शिव ने उत्तर दिया: “हे पराक्रमी रुद्र, तुम मेरे ही अंश से उत्पन्न हो। मेरे गणों का नेतृत्व करो, और दक्ष को उसके यज्ञ सहित नष्ट कर दो।”

तं किं करोमीति गुणन्तमाह
बद्धाञ्जलिं भगवान् भूतनाथः ।
दक्षं सयज्ञं जहि मद्भटानां
त्वमग्रणी रुद्र भटांशको मे ॥ ४ ॥

*taṁ kiṁ karomīti gṛṇantam āha baddhāñjaliṁ bhagavān bhūta-nāthaḥ dakṣaṁ sa-yajñaṁ jahi
mad-bhaṭānām tvam agrāṇī rudra bhaṭāmśako me*

अर्थ: जो हाथ जोड़कर “मैं क्या कहूँ?” पूछ रहा था, उस प्राणी से भूतनाथ भगवान् ने कहा: “हे पराक्रमी रुद्र, मेरे ही अंश से उत्पन्न होकर, तुम मेरे गणों के अग्रणी बनो और दक्ष को उसके यज्ञ सहित नष्ट कर दो।” (स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 4)

यज्ञ पर आक्रमण

भगवान् शिव की श्रद्धापूर्वक परिक्रमा करके, वीरभद्र चल पड़े, भयंकर गर्जना करते हुए और मृत्यु को भी नष्ट करने में समर्थ एक त्रिशूल उठाए, रुद्र के गर्जते गणों से अनुगत। यज्ञ में, ऋत्विजों, दक्ष, एकत्रित अतिथियों तथा ब्राह्मणों और उनकी पत्नियों ने उत्तर दिशा में एक विचित्र अन्धकार तथा धूल का बादल उठता देखा, और भयभीत होकर सोचने लगे कि यह क्या हो सकता है — क्योंकि न वायु बह रही थी और न कोई डाकू इसका कारण हो सकते थे। व्यथित होकर, दक्ष की पत्नी प्रसूति तथा अन्य स्त्रियों ने समझ लिया: यह उस अन्याय का फल है जो दक्ष ने अपनी निर्दोष कन्या को उसकी बहनों के समक्ष अपमानित करके किया था, और भगवान् रुद्र को दिए गए अपमान का फल है। जैसे-जैसे वे बोलती रहीं, आकाश तथा पृथ्वी पर बार-बार सबसे बुरे प्रकार के अपशकुन प्रकट हुए, जिन्होंने दृढ़-हृदय दक्ष तक को भयभीत कर दिया।



मृत्यु को भी नष्ट करने में समर्थ त्रिशूल धारण किए, वीरभद्र रुद्र के गर्जते गणों के अग्रभाग में यज्ञ पर आक्रमण करते हैं, जबकि एक विचित्र अन्धकार तथा उठती धूल सभा को भय से भर देती है (श्लोक 5-13)।

यज्ञ का विध्वंस

तब रुद्र के अनुयायी — उठे हुए अस्त्रों से सज्जित, विकराल तथा विविध रूपों वाले — हर ओर से टूट पड़े और उस विशाल यज्ञस्थल को घेर लिया। कुछ ने यज्ञशाला के स्तम्भ तथा धरन तोड़ डाले; कुछ ने पत्नियों के कक्ष, सभा-भवन, भण्डार-कुटी तथा रसोई को ध्वस्त कर दिया; कुछ ने पवित्र पात्रों को चूर-चूर कर दिया और यज्ञ-अग्नियों को बुझा दिया; कुछ ने पवित्र परिसरों को बिखेर तथा दूषित कर दिया। अन्यो ने भागते देवताओं को पकड़ लिया। मणिमान् ने ऋषि भृगु को बाँधा; वीरभद्र ने स्वयं दक्ष को पकड़ा; चण्डेश ने पूषा देव को पकड़ा, और नन्दीश्वर ने भग को धर दबोचा। इस अत्याचार को देखकर तथा पत्थरों से बुरी तरह मारे जाकर, ऋत्विज, अतिथि, तथा दिव्य प्राणी चारों दिशाओं में भाग निकले।

वीरभद्र ने उन लोगों के साथ, जिन्होंने दक्ष की अवमानना का समर्थन किया था, उनके कर्मों के अनुरूप व्यवहार किया: उन्होंने भृगु की मूँछ उखाड़ ली — वही पुरोहित जिसने भगवान् शिव को शाप दिया था और अब अपने हाथों से यज्ञ-अग्नि में आहुति दे रहे थे; उन्होंने भग को गिराकर उसके नेत्र निकाल लिए, क्योंकि भृगु के शाप देते समय भग ने भौंहेँ उठाकर अपनी सहमति प्रकट की थी; और उन्होंने दक्ष के दाँत तोड़ डाले, जिसने स्वयं शिव को शाप देते समय अपने दाँत दिखाए थे, तथा पूषा के दाँत भी, जिसने शिव की निन्दा होते समय अपने दाँत दिखाकर हँसी थी।



रुद्र के गण प्रांगण में टूट पड़ते हैं और दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करते हैं, उसके स्तम्भ तथा पात्र उलट देते हैं और भयभीत ऋत्विजों तथा अतिथियों को बिखेर देते हैं (श्लोक 14-19)।

दक्ष का शिरच्छेद

दक्ष के वक्ष पर अपना पैर रखकर, त्रिनेत्र वीरभद्र ने एक तीक्ष्ण अस्त्र से उसका सिर काटने का प्रयास किया, किन्तु वे उसे काट न सके। यह देखकर बड़े विस्मित हुए कि कोई अस्त्र दक्ष की त्वचा तक को नहीं भेद सका, उन्होंने बहुत देर तक विचार किया। तब, यज्ञ में जिस विधि से यज्ञ-पशुओं का वध किया जाता था उसे देखकर, वीरभद्र ने दक्ष का सिर उसके शरीर से उसी विधि से अलग कर दिया — यजमान को ही उस पशु के समान मानकर जिसकी आहुति दी जानी थी।

दृष्ट्वा संज्ञपनं योगं पशूनां स पतिर्मखे ।
यजमानपशोः कस्य कायात्तेनाहरच्छिरः ॥ २४ ॥

dṛṣṭvā sañjñāpanaṁ yogaṁ paśūnāṁ sa patir makhe yajamāna-paśoḥ kasya kāyāt tenāharac chiraḥ

अर्थ: यज्ञ में यज्ञ-पशुओं के वध की विधि को देखकर, शिव के गणों के उस स्वामी ने दक्ष का — जो यजमान अब आहुति दिए जाने वाला पशु बन गया था — सिर उसी विधि से उसके शरीर से अलग कर दिया। (स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 24)

भूत-प्रेतों तथा पिशाचों की ओर से इस कर्म की प्रशंसा में जयघोष उठा, जबकि दक्ष के अपने पक्ष ने इसके विरुद्ध हाहाकार मचाया। क्रोध से भरे वीरभद्र ने दक्ष के सिर को दक्षिणाग्नि नामक यज्ञ-अग्नि में आहुति के रूप में डाल दिया, समस्त यज्ञ-भवन में आग लगा दी, और कैलास पर्वत की ओर प्रस्थान किया।

जुहावैतच्छिरस्तस्मिन्दक्षिणाग्नावमर्षितः ।
तद्देवयजनं दग्ध्वा प्रातिष्ठद् गुह्यकालयम् ॥ २६ ॥

juhāvaitac chiras tasmin dakṣiṇāgnāv amarṣitaḥ tad-deva-yajanaṁ dagdhvā prātiṣṭhad guhyakālayam

अर्थ: अमर्ष से भरकर वीरभद्र ने उस शिर को उसी दक्षिणाग्नि में आहुति स्वरूप अर्पित किया, और उस यज्ञ-स्थल को भस्म करके गुह्यकों के धाम, कैलास पर्वत की ओर प्रस्थान किया। (स्कन्ध 4, अध्याय 5, श्लोक 26)



अपना कार्य पूर्ण करके, वीरभद्र यज्ञ-भवन में आग लगा देते हैं और कैलास की ओर प्रस्थान करते हैं, दक्ष के अभिमानी यज्ञ को खण्डहर में छोड़कर (श्लोक 24-26)।

इसी के साथ पंचम अध्याय समाप्त होता है। दक्ष का भव्य यज्ञ, जो अभिमान में आरम्भ हुआ था और भगवान् के प्रति अवमानना से कलंकित था, राख में पड़ा है — और पराजित तथा भयभीत देवगण शीघ्र ही एकमात्र शेष उपाय खोजेंगे: कैलास जाकर उस भगवान् से क्षमा-याचना करना जिनका उन्होंने अपराध किया।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् के प्रति अवमानना अपना ही विनाश गति में ला देती है। दक्ष का भव्य यज्ञ संयोग से नहीं, बल्कि भगवान् शिव के प्रति उसके द्वेष तथा सती के प्रति उसकी क्रूरता के प्रत्यक्ष फल के रूप में नष्ट होता है। शास्त्र स्पष्ट रूप से दिखाता है कि भगवान् तथा उनके भक्तों के प्रति वैर अपना ही विनाश साथ लाता है (श्लोक 9-11)।
2. भगवान् का क्रोध उनके प्रेम की ही छाया है — और वह क्रोध भी एक उच्चतर सत्ता के अधीन है। शिव का क्रोध कोई क्षुद्र कोप नहीं, बल्कि असह्य सीमा तक आहत प्रेम का शोक है। वीरभद्र तक, इसका उग्र मूर्तरूप, भगवान् से ही उत्पन्न होते हैं और उनकी आज्ञा से ही कर्म करते हैं — यह स्मरण दिलाता है कि भगवान् भयंकर में भी सर्वोच्च सत्ता बने रहते हैं (श्लोक 1-4)। मैत्रेय इस सर्वोच्चता को स्पष्ट कर देते हैं: उस क्रोध से उत्पन्न यह विशालकाय प्राणी और कुछ नहीं, अपितु भगवान् के क्रोध का साक्षात् मूर्तरूप है, जो पूर्णतः भगवान् शिव की आज्ञा का पालन करने के लिए बद्ध है (श्लोक 5)। इतना भयंकर प्राकट्य भी कोई स्वतन्त्र अथवा नियमहीन शक्ति नहीं है; यह दैवी न्याय का साधन है, दैवी सनक नहीं — यह प्रमाणित करता है कि शिव जैसे महान् व्यक्तित्वों द्वारा धारण की गई अपार शक्तियाँ भी, प्रत्येक क्षण, उस एक परम भगवान् की इच्छा के अधीन तथा उसी की अभिव्यक्ति बनी रहती हैं, जो अन्ततः इन सबका संचालन करते हैं।
3. जो क्रूरता का समर्थन करते हैं वे उसके प्रतिफल में भागी होते हैं। भृगु, भग तथा पूषा को यँ ही नहीं चुना गया, बल्कि इसलिए कि प्रत्येक ने शिव के अपमान पर हँसी थी या उसका अनुमोदन किया था। पवित्र के उपहास में आनन्द लेना स्वयं एक अपराध है (श्लोक 19-21)।
4. अभिमान विद्वान् को भी अन्धा कर देता है — और वास्तविक महानता वह नहीं जो दिखती है। दक्ष, प्रजापति तथा यज्ञ के अधिपति, अपने ही अहंकार से गिराए जाते हैं। उल्लेखनीय है कि जो वृत्तान्त उन्हें दोषी ठहराता है वही उन्हें उस क्षण भी दृढ़-हृदय कहता है जब सती अपने प्राण त्यागने को उद्यत थीं — फिर भी शास्त्र इस बाह्य दृढ़ता को सच्ची आत्म-महानता नहीं मानने देता: वास्तविक महानता, वह बताता है, पद, विद्या अथवा साहस से नहीं, अपितु भगवान् के प्रति समर्पित हृदय से प्रमाणित होती है (श्लोक 12)। इसी कसौटी पर, दक्ष का ऊँचा पद तथा अनुष्ठान-निपुणता कोई रक्षा नहीं दे सके, क्योंकि जो एक वस्तु मायने रखती थी वह ठीक प्रतिफल के क्षण में अनुपस्थित थी — और उसी खोखले अभिमान को वीरभद्र यज्ञ की चरम घड़ी में उनके सिर के साथ छीन लेते हैं (श्लोक 24)।
5. अपशकुन तथा भय अन्याय के फल से पहले आते हैं। विचित्र अन्धकार, उठती हुई धूल, तथा आकाश एवं पृथ्वी में बार-बार प्रकट होने वाले अपशकुन — सब सभा को प्रहार से पूर्व चेताते हैं। प्रसूति स्वयं, यह देखकर, आने वाले संकट की तुलना भगवान् रुद्र के प्रलय-नृत्य से करती हैं — बिखरी हुई जटाएँ, दिशाओं के अधिपतियों को बेधता त्रिशूल, दिशाओं में गूँजती गर्जना-सी हँसी — और चेतावनी देती हैं कि ऐसा क्रोध जगने पर स्वयं सृष्टिकर्ता भी अक्षत नहीं बच पाता। जब भगवान् का अनादर होता है तब संसार स्वयं सिहर उठता है (श्लोक 7-12)।

एक भाक्तेपूणं चिन्तन

यह गर्जन का अध्याय है, और यह गम्भीर श्रद्धा के साथ पढ़े जाने की माँग करता है। इसकी हिंसा से चकित होकर इसका अर्थ चूक जाना सरल है: शास्त्र हमें, अपने पास उपलब्ध सबसे प्रबल शब्दों में, यह दिखा रहे हैं कि वे भगवान् तथा उनके भक्तों के प्रति अवमानना को कितनी गम्भीरता से देखते हैं। दक्ष किसी साधारण अर्थ में दुष्ट पुरुष नहीं है — वह विद्वान् है, शक्तिशाली है, पवित्र अनुष्ठानों का ज्ञाता है। उसका विनाश एक ही घातक दोष से आता है: उसने भगवान् का तिरस्कार किया और उन्हें सम्मान देना सहन न कर सका। यह अध्याय भगवान् को प्रतिशोधी कल्पित करने का निमन्त्रण नहीं, बल्कि हमारी अपनी छोटी अवमाननाओं के सामने रखा एक दर्पण है — वह उपहास जिसे हम सह लेते हैं, वह सम्मान जिसे हम रोक लेते हैं, वह अभिमान जो झुकना नहीं चाहता। वीरभद्र का तूफान अन्ततः एक आन्तरिक सत्य का बाह्य रूप है: जो भगवान् के आगे झुकने से इनकार करता है वह एक दिन उन्हीं के द्वारा तोड़ा जाएगा, जबकि जो हृदय झुकता है वह सुरक्षित रखा जाता है। इस कठिन अध्याय की करुणा यह है कि यहाँ भी, विनाश के ठीक क्षण में, मेल-मिलाप का द्वार पहले से ही खुल रहा है, और अगला अध्याय देवताओं को उसके पार ले जाएगा।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, उस सूक्ष्म अवमानना से अपने हृदय की रक्षा करें जिसने दक्ष का विनाश किया। जब आप कुछ शान्त क्षणों के स्मरण के लिए बैठें, तो आरम्भ में किसी के प्रति धारण किए हुए किसी भी अभिमान या शिकायत को छोड़ दें, और उसे इन शब्दों के साथ भगवान् के चरणों में अन्तर्मान से अर्पित कर दें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”। फिर संकल्प करें कि आज आप भगवान् का सम्मान वहाँ करेंगे जहाँ भी आप उन्हें पाएँ — पूजा में, शास्त्रों में, और अपने चारों ओर के भक्तों तथा गुरुजनों में — और यह कि आप पवित्र वस्तुओं के उपहास में न सम्मिलित होंगे, न उसके बीच सहज बैठे रहेंगे। अभिमान के बजाय श्रद्धा को चुनकर, आप उसी शिक्षा के प्रति निष्ठा रखते हैं जो यह अध्याय अग्नि के माध्यम से देता है।

उपसंहार

चतुर्थ स्कन्ध का पंचम अध्याय वह प्रतिफल है जो सती की मृत्यु के पश्चात् आता है। जब नारद कैलास पर समाचार लाते हैं, तब भगवान् शिव का शोक अपार क्रोध में बदल जाता है; वे अपनी जटा से एक लट उखाड़कर भूमि पर पटकते हैं, और उससे विशालकाय वीरभद्र प्रकट होते हैं, जिन्हें वे दक्ष तथा उसके यज्ञ को नष्ट करने की आज्ञा देते हैं। वीरभद्र रुद्र के गणों के अग्रभाग में यज्ञ पर आक्रमण करते हैं, और अन्धकार तथा भय के बीच वे यज्ञस्थल का विध्वंस करते हैं, उन लोगों को दण्ड देते हैं जिन्होंने शिव के अपमान का समर्थन किया था, और अन्ततः दक्ष का शिरच्छेद करके उसका सिर अग्नि में डाल देते हैं तथा समस्त भवन को जलाकर कैलास लौट जाते हैं। दक्ष का अभिमानी यज्ञ खण्डहर में पड़ा है, और पराजित देवताओं को अब उस भगवान् की करुणा खोजनी है जिनका उन्होंने अपराध किया। मैत्रेय हमें यहीं छोड़ते हैं, उस याचना की देहली पर — और उस करुणा की देहली पर जो उसका उत्तर देगी।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), चतुर्थ स्कन्ध, पंचम अध्याय, पृ. 306–309 (PDF पृ. 369–372)।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान् पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-4-adhyay-5-daksha-yajna-vidhwans.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

